मदन मोहन मालवीय के दृष्टिकोण में शिक्षा का महत्त्व

[1]शरद कुमार, [2]डॉ संदीप कुमार श्रीवास

[1]शोधछात्र, [2]सहायक आचार्य
शिक्षक–शिक्षा विभाग
प्रो. एच. एन. मिश्रा कॉलेज ऑफ एजुकेशन, कानपुर

शोध सार– मदन मोहन मालवीय एक शिक्षाविद, विचारक एवं युगदृष्टा थे। वे समाज में व्याप्त बुराइयों और प्रथाओं को जड़ से समाप्त करने के लिए तथा प्रगतिशील समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा की वकालत की। शिक्षा के माध्यम से ही मानव के शारीरिक, बौद्धिक एवं भावात्मक विकास पर जोर देते थे ताकि शिक्षा के माध्यम से यह राष्ट्र प्रेम व समाज में अपना योगदान दे सकें। वे शिक्षा को राष्ट्रभाव जागृत करने वाले साधन के रू॰ में देखते थे। शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न शिक्षण संस्थाओं जैसे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, गौरी पाठशाला और हिंदू छात्रावास आदि की स्थापना करके एक क्रांतिकारी कदम उठाया। जो वर्तमान में भी यह शिक्षण संस्थाएं विश्व विख्यात है। इन शिक्षण संस्थाओं से पढ़कर व्यक्ति देश, समाज और राष्ट्र का पुनर्निर्माण कर रहे हैं। जो सपना महामना ने वर्षों पहले देखा था आज वह साकार हो रहा है। उनके द्वारा किए गए शिक्षा में योगदान आज भी प्रशंसनीय योग्य है।

बीज शब्द– शैक्षिक संस्थाएं, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा की पाठ्यचर्या, नैतिक एवं चारित्रिक विकास, अनुशासन।

प्रस्तावना

भारत विचारवान, तर्कशील एवं चिंतनशील महापुरुषों की जन्मस्थली है। यहां समय –समय पर महापुरुषों की भूमिका निभाने वालों का जन्म भारत मां की गोद में होता रहा है। जिससे धरती मां धन्य होती रही है। इन महापुरुषों ने अपने सामाजिक कृतित्व के माध्यम से अज्ञानता के अंधकार से भरे समाज को समय – समय पर न केवल ज्ञान रूपी प्रकाश से एक नई दिशा प्रदान की वर्णन समाज के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण का निभाई है। इनके विचरित ज्ञान, इनके चरित्र और आचरण तथा इनके द्वारा स्थापित आदर्शों एवं मूल्यों ने समय – समय पर मानवीय सभ्यता को श्रेष्ठ से पराकाष्ठा तक पहुंचाने के लिए नूतन मार्ग भी प्रशस्त किया। प्रगतिशील समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में महात्मा गांधी, डॉक्टर भीमराव अंबेडकर, सावित्रीबाई फुले, ज्योतिबा फुले, रविंद्र नाथ टैगोर, श्री अरविंद, विवेकानंद और रामकृष्ण परमहंस आदि जैसे दार्शनिकों एवं शिक्षाविदों ने अपने दृ अपने दार्शनिक विचारों से शिक्षा की ज्योति को और अधिक प्रफुल्लित किया है।

इन्हीं महापुरुषों में पंडित मदन मोहन मालवीय का नाम भी प्रमुख रूप से लिया जाता है। एक राष्ट्रवादी, सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षाविद और प्राचीन भारतीय संस्कृति के विद्वान महामना पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्र के इतिहास में एक विशाल व्यक्ति के रूप में खड़े हैं। उन्होंने प्राचीन और आधुनिक पूर्वी और पश्चिमी संस्कृतियों के एक अद्वितीय समावेशन का प्रतिनिधित्व किया।

महामना मदन मोहन मालवीय शिक्षा को मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का साधन मानते थे। उनकी दृष्टि में शिक्षा वह है जो विद्यार्थी की शारीरिक, बौद्धिक तथा भावात्मक शक्तियों को परिपुष्ट और विकसित कर सके तथा भविष्य में किसी व्यवसाय द्वारा ईमानदारी से जीवन निर्वाह करने के योग्य बना सके। वे शिक्षा को राष्ट्र प्रेम जागृत करने वाली शक्ति बनाना चाहते थे ताकि नई पीढ़ी निःस्वार्थ भाव से समाज एवं राष्ट्र की सेवा कर सके। वे शिक्षा को मानव मात्र का अधिकार मानते थे तथा इसका समुचित प्रबंध राज्य का कर्तव्य मानते थे। वे शिक्षा की एक ऐसी राष्ट्रीय प्रणाली विकसित करना चाहते थे जिसमें प्रारंभिक और माध्यमिक एवं उच्च विश्वविद्यालयों में शिक्षा निशुल्क हो। जिससे निर्धन होने के कारण कोई भी शिक्षा से वंचित न रह जाए। जिसके व्यापक विस्तार से सामाजिक कुरीतियों और आर्थिक विषमताओं को दूर किया जा सके।

महामना मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित शैक्षिक संस्थाएं

महामना मदन मोहन मालवीय और उच्चकोटि के देशभक्त थे। देश की स्वतंत्रता, राष्ट्र के गौरव की वृद्धि तथा जनता की सर्वांगीण उन्नति उनकी देश सेवा के मुख्य लक्ष्य थे। वे जाति, भाषा, संप्रदाय और क्षेत्रीयता के आधार पर भारतीयों के मध्य बढ़ते खाई को समाप्त कर भारत को एक शक्तिशाली राष्ट्र और संप्रभु देश के रूप में देखना चाहते थे और शिक्षा को राष्ट्र की उन्नति का अमोघ अस्त्र मानते थे तथा उन्होंने शैक्षिक संस्थानों की स्थापना अपने जीवन का महत्वपूर्ण लक्ष्य बनाया। इसके लिए वह किसी से भी दान लेने में संकोच नहीं करते थे। धन को शैक्षिक संस्थानों के स्थापना और विकास पर ही लगा लगते थे, व्यक्तिगत कार्य होते हेतु नहीं। उन्होंने प्रमुख शैक्षिक संस्थानों का निर्माण कराया–

1. हिंदू बोर्डिंग हाउस–

महामना द्वारा स्थापित कराया गया यह पहला सार्वजनिक संस्थान है। महामना उचित शिक्षा हेतु छात्रावास के महत्व को समझते थे उन्होंने 1901 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के म्योर सेंट्रल कॉलेज के लिए 230 कमरों का एक विशाल छात्रावास का निर्माण कराया। यह छात्रावास 1903 में बनकर तैयार हुआ। इसके निर्माण में ढाई लाख से अधिक रुपए खर्च हुए थे। जिसमें ₹100000 की राशि उन्होंने प्रांतीय सरकार से मिली थी शेष राशि उन्होंने चंदा इकट्ठा किया। प्रारंभ में इस छात्रावास का नाम मैकडॉनल्ड

हिंदू बोर्डिंग हाउस रखा गया, पर महामना के देहांत के उपरांत इसका नाम बदलकर मालवीय हिंदू बोर्डिंग हाउस कर दिया गया। प्रख्यात इतिहासकार पंडित सुंदरलाल इसी छात्रावास में रहते थे। आजादी की लड़ाई में यह क्रांतिकारी के छिपने का प्रमुख स्थान रहा, चंद्रशेखर आजाद इसी छात्रावास में रुक करते थे, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर यहीं के अंतःवासी रहते हुए इलाहबाद विश्वविद्यालय के अध्यक्ष चुने गए। यहीं से देश की सियासत में कदम रखा।

2. गौरी पाठशाला–

महामना अपने निजी जीवन से लेकर सार्वजनिक जीवन में स्त्री शक्ति की महत्ता को न केवल स्वीकार करते हैं बल्कि व्यावहारिक रूप से भव्यता प्रदान करते हैं। वह कहते थे मैंने मां की शिक्षा को मूल मानते हुए स्त्री शक्ति को काम्या और भोग्य की से बाहर निकाल कर साम्या और आराध्या के रूप में प्रतिष्ठित करने के प्रबल पक्षधर थे। इसलिए लेजिसलेटिव काउंसिल के बहस में वे देवदासी प्रथा का प्रबल विरोध करते हुए कहते हैं कि देवदासी प्रथा को किसी भी रूप में धार्मिक स्वीकृति नहीं प्राप्त है। महामना सारे समाज के उन्नति के लिए नारी शिक्षा को आवश्यक मानते थे।वे देश सेवा के लिए नारी को भी उतना ही महत्वपूर्ण मानते थे जितना पुरुष को। सन 1904 में मालवीय ने राजर्षी पुरुषोत्तम दास टंडन और बालकृष्ण भट्ट के सहयोग से गौरी पाठशाला की स्थापना की। यह आजकल उच्चतर माध्यमिक महाविद्यालय हो गया है।

3. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय–

पवित्र शहर वाराणसी में स्थित काशी हिंदू विश्वविद्यालय एक अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिक्षा का मंदिर है। इस रचनात्मक और अभिनव विश्वविद्यालय की स्थापना सन 1916 में राष्ट्रवादी एवं शिक्षाविद पंडित मदन मोहन मालवीय ने डॉक्टर एनी बेशेंट जैसे महान हस्तियों के सहयोग से की थी। जिन्होंने भारत के विश्वविद्यालय के रूप में इसकी कल्पना की थी। काशी हिंदू विश्वविद्यालय संसदीय कानून 1915 के तहत स्थापित किया गया था। इसने स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और भारत में शिक्षा के सबसे बड़े केंद्र के रूप में विकसित हुआ। इसने आधुनिक भारत के अनेक महान स्वतंत्रता सेनानियों और राष्ट्र निर्माता को जन्म दिया है और बड़ी संख्या में प्रसिद्ध विद्वानों, कलाकारों, वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकीविदों के माध्यम से राष्ट्र की प्रकृति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

महामना मदनमोहन मालवीय के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

शिक्षा का सर्वप्रथम उद्देश्य मनुष्य का शारीरिक विकास होना चाहिए। इनके अनुसार स्वस्थ शरीर के बाद दूसरी आवश्यकता है, ज्ञान, बुद्धि और विवेक की। अतः शिक्षा द्वारा इनका विकास भी होना चाहिए। मालवीय जी सच्चे समाज सेवक और अपनी संस्कृति के सच्चे अनुयायी थे। ये शिक्षा द्वारा संस्कृति की रक्षा पर बहुत बल देते थे। चरित्र को ये मनुष्य का अति आवश्यक गुण मानते थे अतः शिक्षा के द्वारा उसके विकास पर भी बल देते थे। ये शिक्षा द्वारा मनुष्य को अपनी रोजी–रोटी कमाने योग्य भी बनाना चाहते थे। ये सच्चे राष्ट्र भक्त थे और शिक्षा द्वारा बच्चों में राष्ट्रीयता के विकास की बात करते थे। आत्मिक उन्नति को तो ये मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य मानते थे। इनके द्वारा निश्चित शिक्षा के इन उद्देश्यों को आज की भाषा में निम्नलिखित रूप में क्रमबद्ध किया जा सकता है –

1. शारीरिक विकास–

मालवीय जी के अनुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति का पहला साधन शरीर है, स्वस्थ शरीर है, आरोग्य है। साफ जाहिर है कि ये मनुष्य के शरीर को साधन नानते थे, साध्य नहीं। परन्तु साध्य (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) की प्राप्ति के लिए शरीर की पहली आवश्यकता है तो शिक्षा द्वारा मनुष्य को स्वास्थ्य रक्षा की शिक्षा देना आवश्यक है, अतः यह मनुष्य जीवन का उद्देश्य हो या न हो परन्तु शिक्षा का तो सर्वप्रथम उद्देश्य होना चाहिए। मालवीय जी ने एक स्थान पर यह भी लिखा है कि यदि राष्ट्र निवासियों का शरीर दुर्बल होगा तो राष्ट्र भी दुर्बल होगा। इन्होंने स्वास्थ्य के तीन खम्भे बताए हैं– आहार, शयन और ब्रह्मचर्य। इनकी दृष्टि से शिक्षा द्वारा मनुष्य को उचित आहार, शयन और ब्रह्मचर्य का ज्ञान कराना चाहिए और तदनुकूल आचरण (व्यवहार) में प्रशिक्षित करना चाहिए।

2. मानसिक एवं बौद्धिक विकास –

मनुष्य के मानसिक एवं बौद्धिक विकास से मालवीय का तात्पर्य विभिन्न भाषाओं और विभिन्न विषयों के ज्ञान से था। इन्होंने स्पष्ट किया कि भाषा और विविध विषयों का ज्ञान ही मनुष्य को विवेकशील बनाना है और विवेक से मनुष्य अच्छे–बुरे में भेद करता है, करणीय और अकरणीय कर्मों को समझता है और सच्चे मार्ग का अनुसरण करता है। यूं मालवीय जी भारतीय ज्ञान को सर्वश्रेष्ठ मानते थे परन्तु साथ ही यह भी स्वीकार करते थे कि भौतिक विकास के लिए पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान अपेक्षाकृत अधिक उपयोगी है।

3. नैतिक एवं चारित्रिक विकास –

मालवीय जी नैतिक नियमों के पालन को आवश्यक मानते थे और चरित्र बल की श्रेष्ठता स्वीकार करते थे। इन्होंने शिक्षा द्वारा मनुष्य के नैतिक एवं चारित्रिक विकास पर विशेष बल दिया है। ये धार्मिक नियमों को नैतिकता और चरित्र का आधार मानते थे। यही कारण है कि ये मनुष्य के नैतिक एवं चारित्रिक विकास के लिए धर्म शिक्षा को आवश्यक मानते थे।

4. व्यावसायिक एवं आर्थिक विकास –

हमारे चार पुरुषार्थों में 'अर्थ' दूसरे नम्बर पर आता है। अर्थ का वास्तविक अर्थ है–साधन। और क्योंकि धन सब वस्तुओं को प्राप्त करने का साधन है इसलिए उसे अर्थ कहते हैं। मालवीय जी देश की गरीबी और बेरोजगारी की समस्या से भी चिन्तित थे। इस सबके लिए इन्होंने शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा (कृषि, कला–कौशल एवं अन्य उद्योगों की शिक्षा) की व्यवस्था करने पर बल दिया था। इन्होंने स्पष्ट किया कि भारत कृषि प्रधान देश है इसलिए यहाँ कृषि शिक्षा की विशेष व्यवस्था होनी चाहिए।

5. राष्ट्रीयता का विकास –

मालवीय जी के अनुसार भारतीय राष्ट्रीयता का मूल आधार हिन्दुत्व है। हिन्दुत्व से मालवीय जी का बड़ा विस्तृत अर्थ था। इनके अनुसार हिन्दुत्व भारत के धर्म–दर्शन का नाम है, एक ऐसे धर्म–दर्शन का नाम जो प्राणी मात्र के कल्याण में विश्वास करता है, एक ऐसे धर्म–दर्शन का नाम जो शाश्वत है। साफ जाहिर है कि मालवीय जी संकुचित राष्ट्रीयता (राष्ट्रवाद) के पक्षधर नहीं थे, ये तो वसुधैव कुटुम्बकम् के पोषक थे। ये शिक्षा द्वारा इसी राष्ट्रीयता की सुरक्षा पर बल देते थे।

महामना मदनमोहन मालवीय के अनुसार शिक्षा की पाठ्यचर्या

मालवीय जी ने शिक्षा की पाठ्यचर्या की कोई क्रमबद्ध रूपरेखा तो प्रस्तुत नहीं की परन्तु उसके निर्माण के सम्बन्ध में कुछ सुझाव अवश्य दिए हैं। इनका पहला सुझाव तो यह है कि हमारा पाठ्यक्रम हमारे धर्म और संस्कृति पर आधारित होना चाहिए। इन्होंने स्पष्ट किया कि हमें हमारे धर्म और संस्कृति का सही ज्ञान संस्कृत साहित्य से होता है इसलिए भारतीयों को संस्कृत भाषा का ज्ञान अवश्य और अनिवार्य रूप से कराना चाहिए।

महामना मदनमोहन मालवीय के अनुसार अनुशासन

मालवीय जी शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासन का होना आवश्यक मानते थे परन्तु ये अनुशासन से अर्थ आत्मानुशासन से लेते थे। दण्ड के भय से स्थापित व्यवस्था को ये अनुशासन नहीं मानते थे। ये इस बात पर बल देते थे कि शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को अपने ऊपर स्वयं नियन्त्रण रखना चाहिए और मन, वचन व कर्म से शुद्ध होना चाहिए। इनका स्पष्ट मत था कि छात्र तो तभी अनुशासन में रहेंगे जब शिक्षक अनुशासन में रहेंगे अतः आवश्यक है कि शिक्षकों में का आचरण अपने में आदर्श एवं अनुकरणीय होना चाहिए।

महामना मदनमोहन मालवीय के अनुसार शिक्षक

मालवीय जी ने अपना जीवन शिक्षक के रूप में प्रारम्भ किया था। ये प्राचीन परम्परा के अनुयायी थे और शिक्षकों को समाज में सर्वोच्च स्थान देते थे। इनके अनुसार शिक्षक को धर्म परायण, विद्वान और सत्यानुवेषी होना चाहिए और शिक्षार्थियों के प्रति समर्पित होना चाहिए। इसके साथ–साथ प्रत्येक शिक्षक का आचरण आदर्श और अनुकरणीय होना चाहिए। ये शिक्षकों से यह भी अपेक्षा करते थे कि वे समाज सेवक और राष्ट्र भक्त हों। इनका विश्वास था कि ऐसे शिक्षकों से ही शिक्षार्थी सच्चे ज्ञान और उच्च आचरण की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

महामना मदनमोहन मालवीय के अनुसार शिक्षार्थी

मालवीय जी शिक्षार्थियों से ब्रह्मचर्य पालन की अपेक्षा करते थे। ये अपने शिष्यों को प्रातः काल उठने, नित्य संध्यावन्दन करने, बड़ों का आदर करने, शिक्षकों में श्रद्धा रखने और उनकी आज्ञा का पालन करने और प्राणीमात्र की सेवा करने का उपदेश देते थे। इनके अनुसार विद्यार्थियों को अपने मन, वचन और कर्म पर संयम रखना चाहिए, विनम्र होना चाहिए, सादा जीवन जीना चाहिए और विद्या से प्रेम करना चाहिए। ये भारत में प्राचीन गुरु–शिष्य परम्परा को पुनः स्थापित करना चाहते थे।

निष्कर्ष –

उपरोक्त विवरण से यह निष्कर्ष निकलता है कि पंडित मदन मोहन मालवीय शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन करना चाहते थे, वे राष्ट्र, समाज का सतत विकास शिक्षा के माध्यम से करना चाहते थे। वे समाज के निर्धन वर्गों के लिए निशुल्क शिक्षा की वकालत की, साथ ही स्त्री शिक्षा की भी। जिससे उनके अंदर राष्ट्र भाव जागृत हो सके। एक निरक्षर व्यक्ति राष्ट्र के विकास, समाज में हो रही गतिविधियों और परिवर्तन को नहीं समझ सकता। उन्होंने जरूरत के हिसाब से विभिन्न संस्थाओं की स्थापना की। जो आज भी शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। इनके द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्यों का वर्तमान में भी प्रासंगिक है।

सन्दर्भ:

1. अंजलि यादव. (2021). पंडित मदन मोहन के शैक्षिक विचार . टारगेट नोट्स .
2. विभा एस. के. (2021). पं. मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक व्यवस्था एवं आचार संहिता का विश्लेष्णात्मक अध्ययन. जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरी रिसर्च इन अलाइड एजुकेशन, 18 (6), 255–260.
3. आध्यात्मिक रूप से भी स्त्री शक्ति के प्रबल पूजक थे मालवीय जी . (2021). पांचजन्य. https%//panchjanya-com/2021/12/25/187789/bharat/special&article&of&about&madan&mohan&malviya/
4. बन्दे. (2020). पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचार - https%//www-scotbuzz-org/2017/10/Mahamana&Pt-&Madan&Mohan&Malaviya-html
5. सरिता – सुमित. (2020). पंडित मदन मोहन मालवीय का शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. आधुनिक भारतीय शिक्षा, 10 (2), 13–19.
6. https%//ncert-nic-in/pdf/publication/journalsandperiodicals/bhartiyaadhunikshiksha/BAS_Oct%2020-pdf

7. राय, विनय कुमार (2021). महामना पंडित मदन मोहन मालवीय का शैक्षिक चिंतन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. ज्ञान गरिमा सिंधू, 129–137.